Date: / /

लोक वाद्य / संगीत

लोक गीतों, लोक गाथाओं एवं लोक नाट्यों की प्रस्तुति के साथ लोक वाद्यों के प्रयोग से उनकी रूचि और भी अधिक बढ़ जाती है। प्रत्येक प्रदेश में प्रचलित लोक वाद्यों की अपनी विशिष्ट पहचान होती है। राजस्थान के लोक संगीत में अनेक वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। जैसे- नगाड़ा, ढोलक, चंग, तंबूरा, मोरचंग, नड़, अलगोजा, कमायचा, मंजीरा, चिपियाँ, पुंगी, सारंगी, रावणहत्था, मुरला आदि। गायक जातियाँ ढोली, लंगा आदि इन वाद्यों को बजाते भी थे और इनका निर्माण भी करते थे। कुछ प्रमुख लोक वाद्यों की बनावट, उनको बजाने का तरीका, बजाने का अवसर तथा जाति विशेष के वाद्यों का उल्लेख निम्न प्रकार से किया गया है-

(1) **रावणहत्था** ⇒
यह दो तार वाला धनुषनुमा वाद्य यंत्र होता है। इसका एक तार घोड़े की पूँछ के बाल से बनता है और एक लोहे के तारों को बटकर बनाया जाता है। इसमें केवल एक घोड़ी ही होती है। मुख्य तार घोड़ी के ऊपर से तथा दूसरे तार घोड़ी के बीच में से निकलते हैं। इनके निर्माण में नारियल की खोल तथा बाँस की लकड़ी प्रयोग में लायी जाती है। इसे कमान से बजाया जाता है। पश्चिम राजस्थान के नथावाचक, भोपे तथा भील इसे बजाते हैं। पाबू जी की पड़ के वाचन करते समय भोपे इसे बजाया करते हैं। ★ Imp.

(2) **मोरचंग** ⇒
लोहे से बने इस वाद्य यंत्र के एक किनारे पर लोहे का जीभमुहा यंत्र लगा रहता है। इसे बाएँ हाथ में रख थामकर किनारों को होठों में रखते हैं तथा फूंक देते हुए दायें हाथ की अंगुली से खींचकर बजाया जाता है। इसे गड़रिये अधिक बजाते हैं। लंगा भी सारंगी के साथ-2 इसे बजाते हैं।

Scanned with CamScanner

3) नगाड़ा ⇒

राजस्थान में नगाड़े बजाने का प्रचलन अधिक है। उत्सव, विवाह अथवा अन्य किसी मांगलिक अवसर पर नगाड़े बजाना शुभ माना जाता है। ये दो कटोरेनुमा वाद्ययंत्र होते हैं। बड़ा तांबे का तथा छोटा लोहे का होता है। बड़े कटोरे पर भैंस की खाल तथा छोटे कटोरे पर ऊँट की खाल लगी हुई होती है। दो छड़ियों से इसे बजाया जाता है। ख्याल प्रदर्शन में नगाड़ों पर पड़े डंकों की आवाज एक जादुई असर करती है।

4) कमायचा ⇒

राजस्थान के लंगा इसका अधिक प्रयोग करते हैं। यह भी तारों वाला यंत्र है जो कमान से बजाया जाता है। इसके तूंबे पर चमड़े की पतली झिल्ली मढ़ी हुई होती है। कमायचा में नौ तार होते हैं जिनमें तीन तार बटी हुई आँत के और छः तार लोहे के होते हैं।

5) पुंगी ⇒

राजस्थान के जोगी तथा सपेरे पुंगी बजाते हैं। इसमें लकड़ी के फांकों की दो ट्यूबे होती हैं जिनमें एक पत्ती लगी होती है। इसके नीचे का हिस्सा तूंबे से जुड़ा होता है। एक खोखले बाँस में लगभग सात-आठ छेद होते हैं। जिन पर अंगुलियाँ रखकर विभिन्न स्वर उत्पन्न किए जाते हैं। एक खोखला बाँस मूल ध्वनि उत्पन्न करता है। इसे फूंक देकर अंगुलियों को आवश्यकतानुसार रखते और हटाते हुए ध्वनि उत्पन्न की जाती है।

6) चंग ⇒

चंग गोलाकार होता है। इस वाद्ययंत्र के रीम पर अंगुलियों के बीच एक पतली लकड़ी बजाने के लिए लगायी जाती है। तथा दूसरे हाथ की हथेली व अंगुलियों से इसे बजाया जाता है। होली के अवसर पर गेरियों द्वारा बजाई

Scanned with CamScanner

गयी चंग पूरे वातावरण को मादक बना देती है।

7) नड़ ⇒ यह एक विशेष प्रकार के बाँस से बनायी जाती है। इस खोखले में तीन छेद होते हैं जिसे फूंक देकर बजाया जाता है। इसमें साँस रोकने व छोड़ने की विशेष प्रक्रिया से ही ध्वनि उत्पन्न होती है। यह चरवाहों का प्रिय वाद्य है। करण भील इसका कुशल वादक था। ★ Imp.

8) अलगोजा ⇒ यह एक ऐसा वाद्य है, जिसमें दो बाँसुरी होती हैं। दोनों में छः-छः छेद होते हैं। इसे भी फूंक देकर बजाया जाता है। अलवर जिले के मेव इसे विशेष रूचि से बजाते हैं।

9) मंजीरे ⇒ प्यालेनुमा गोल धातु की दो प्लेट होती हैं। जिनके बीच में मोटा सूती धागा लगा होता है जो दोनों प्लेटों के बीच में से निकलता है। बजाने वाला दोनों प्लेटों को आपस में टकराकर ध्वनि उत्पन्न करता है। भजन-कीर्तन के अवसर पर इसे बजाया जाता है।

10) चिमटा ⇒ जोगी तथा सन्यासी चिमटा बजाते हैं। लोहे के चिमटे के ऊपर घंटियाँ लगी रहती हैं। इनको आपस में टकराते हुए इसे बजाया जाता है।

11) खड़ताल ⇒ यह लकड़ी की चौड़ी-चपटी आकार की होती है। जिसमें पीतल की गोल-२ प्लेटें लगी होती हैं। दो खड़ताल को एक ही हाथ में पकड़ कर बजाया जाता है। एक को अंगूठे में तथा दूसरे को अंगुलियों में डालकर आपस में टकरा-

Scanned with CamScanner

Date: / /

कर मधुर ध्वनि निकाली जाती है। भजन-कीर्तन में इसे बजाया जाता है।

2) पाबूजी के माटे ⇒ ये मिट्टी के दो बड़े आकार के मटके होते हैं। जिनके मुँह पर चमड़े की झिल्ली बंधी होती है। इसे हाथ से बजाया जाता है।

3) खंजड़ी ⇒ यह डमरू के आकार का वाद्य यंत्र है। इसकी ढाँचा लकड़ी का बना होता है। जिस पर बकरी का खाल मढ़ी होती है। कालबेलियाँ व जोगी जाति के लोग गाते व नाचते समय इसे बजाते हैं।

4) सुरला ⇒ यह फूंक मारकर बजाया जाने वाला वाद्य है। यह एक विशिष्ट प्रकार का नालीदार यंत्र है जिसमें दो पोली (नरम) लकड़ियों की नालियाँ होती है। प्रत्येक नली में एक-2 सरकंडा लगा होता है। एक नली से ध्वनि निकलती है तो दूसरी से स्वर बजते हैं।

लोकवाद्यों का वर्गीकरण

(1) सुषिर वाद्य ⇒ इन्हें फूंक वाद्य भी कहा जाता है। इन वाद्यों के छेदों में फूंक मारकर इन्हें बजाया जाता है। जैसे - पुंगी, मुरला, मोरचंग, नड़, अलगोजा, बांसुरी आदि।

2) घनवाद्य ⇒ इस वर्ग के वाद्य पीतल, ताँबा, जस्ता या ऐसी ही किसी धातु से निर्मित होते हैं। इन वाद्यों पर आघात

Scanned with CamScanner

करके अथवा चोट करके इन्हें बजाया जाता है। जैसे- मंजीरे, चिपियाँ / चिमटा, टंकोरा या घंटी, घंटा, खड़ताल

3) अनुरुद्ध वाद्य ⇒ ये वाद्य ताल से बजाये जाते है। इन वाद्यो में कुछ वाद्य एक तरफ से मढ़े होते हैं और अन्य दोनों तरफ से मढ़े हुए होते है। जैसे- तबला, नगाड़ा, चंग, ढोलक, ढोल आदि इसी श्रेणी में आते है।

4) तार वाद्य ⇒ इन वाद्यों मे लगे तारों को झंकृत करके इन्हें बजाया जाता है। सितार, वीणा, रावणहत्था आदि ऐसे ही वाद्य हैं।